शेखावाटी में चौहान राज्य

– डॉ. अवतार कृष्ण शर्मा, प्रवक्ता, इतिहास
स्वामी विवेकानन्द राजकीय महाविद्यालय खेतड़ी

शेखावाटी राजस्थान का विषिष्ट भौगोलिक क्षेत्र है। यह शेखा और वाटी शब्दों के मेल से बना है। राव शेखा आमेर के (जयपुर) के तेरहवें शासक उदयकरण के पौत्र मोकल के पुत्र थे।[1] राव शेखा के वंशज जो आगे जा कर उनके नाम पर शेखावत कहलाए। वाटी स्थानवाचक शब्द है जिसका अर्थ वास या निवास से है। इस प्रकार शेखावाटी का अर्थ उस स्थान से है जहां राव शेखा और उनके वंशजों का अधिकार या आस रहा है। हालांकि शेखावाटी के क्षेत्र निर्धारण को लेकर कींचित मतभेद रहे हैं परन्तु मौटे तौर पर आधुनिक राजस्थान के सीकर एवम झुंझुनूं जिलों का क्षेत्र शेखावाटी के अन्तर्गत माना जाता है।[2]

प्रतिहारों के उत्कर्षकाल में सपादलक्ष (सांभर) के आस–पास के प्रदेष पर चौहान प्रतिहारों के सामन्त के रूप में राज्य कर रहे थे। अहिछत्रपुर (नागौर) और पुन्तल्ला उनके प्रारम्भिक ठिकाने थे। सपादलक्ष चौहानों के आदि पुरूष वासुदेव (551 ई. के लगभग) था। बिजोलिया षिलालेख में इसे सांभर झील का प्रवर्तक कहा गया है।[3] चौहानों ने प्रतिहारों के अधीनस्थ रहते हुए ही शक्ति अर्जीत कर ली थी। हर्षनाथ के शिलालेख (वि.सं. 1030) से पता चलता है कि हर्षनाथ के मंदिर के संस्थापक गूवक प्रथम से लेकर विगृहराज द्वितीय तक चौहानों ने अपने कार्यों से शक्ति अर्जित एवम प्रतिष्ठा अर्जित कर ली थी। गूवक द्वितीय के पुत्र चन्दन राज के उत्तराधिकारी वाक्पति राज प्रथम ने प्रतिहारों को हराकर उनके राज्य के कई भागों पर अधिकार कर प्रतिहारों की अधीनता को उतार फैंकने का सफल प्रयास किया।[4] वाक्पति के बाद विध्यंराज और उनके बाद शासक बने सिंहराज ने सालवण तोमर (तंवर) को हराकर तोरावाटी के आस–पास के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। हर्ष लेख से पता चलता है कि सिंहराज प्रतिहार देवपाल (948 ई.) का सामंत था। सम्भवत देवपाल के बाद 10 शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक चौहान प्रतिहारों से पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो चुके थे।

वाक्पति राज प्रथम से लेकर विग्रहराज चतुर्थ (1158–1163ई.) तक चौहानो ने अजमेर को राजधानी बना कर एक विस्तृत क्षेत्र पर अपना साम्राज्य विस्तार कर लिया था। विग्रहराज चतुर्थ (बिसलदेव) ने तोमरों (तंवरो) को हरा कर दिल्ली को जीता एवं हंसिका (हांसी) को भी अपने कब्जे में कर लिया। इसने अमीर खुसरो खां के नेतृत्व में आक्रमणकारी गजनवियो को परास्त किया जो वर्तमान झुंझुनूं जिले के खेतड़ी के नजदीक बबेरा गांव तक घुस आए थे। नरहड़ शिलालेख से विग्रहराज चतुर्थ के विस्तृत साम्राज्य का पता चलता है। पृथ्वीराज तृतीय (1178– 1192ई.) के काल में चौहानों ने सर्वाधिक ख्याति प्राप्त की। 1192 ई. के तराइन के द्वितीय युद्ध में मुहम्मद गोरी द्वारा पराजित होने के बाद धीरे – धीरे चौहान शक्ति कमजोर हो गई।

चौहानों की अनेक शाखाओं में से कुछ ने शेखावाटी क्षेत्र के आस–पास अपने करद राज्य कायम किए जिन्हें शाकम्भरीश्वरों से यथासम्भव सहयोग मिलता रहा । घाघूं के चौहान भी उन्हीं में से थे। प्रतिहार साम्राज्य के विघटन काल में इन्होंने यहां के पूर्व शासकों, डाहलियों आदि से यह प्रदेश छीन लिया था। यह घटना सम्भवतः 10 वीं शताब्दी विक्रमी के आस–पास घटी।[5]

घाघूं की चौहान शाखा का संस्थापक राणा गांगदेव (घंघरान) को माना जाता है। इसके पुत्र कन्हड़देव के चार पुत्रों–अमरराज, अजेराज, सिंहराज और बच्छराज से चौहानों की चार प्रसिद्ध शाखाओं की उत्पत्ति हुई। ज्येष्ठ अमरराज के वंषज चौहान ही कहलाए जिन्होंने घाघूं से उठकर दद्रेवा में चौहान शाखा स्थापित की। इस वंश में अमरराज के बाद जीवराज और उसके बाद राणा गोगा हुए। राणा गोग देव की ग्यारहवीं पीढ़ी में राणा जैतसी हुए। दद्रेवा से राणा जैतसी के काल का एक शिलालेख विक्रम सम्वत् 1273 का मिला है। जैतसी की छठी पुश्त में हुए मोटाराव के पुत्र कर्मचंद को फिरोज शाह तुगलक ने मुसलमान बना कर उसका नाम कायमखां रखा।[6] कायमखां के वंशज कायमखानी कहलाए जिन्होंने आगे जाकर शेखावाटी में कायमखानियों के नवाबी राज्य स्थापित किए।

राणा कान्हड़देव के द्वितीय एवं तृतीय पुत्रों– अजैराज एवं बच्छराज के वंशजो ने क्रमशः रिणी तथा छापर द्रोणपुर के इलाके पर अधिकार कर लिया। ये क्रमशः चाहिल एवं मोहिल कहलाए।[7] कन्हड़देव के चतुर्थ पुत्र सिद्धराज के वंशज जौड़ चौहान कहलाए। जौड़ चौहानों से सम्बन्धित पुष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। परन्तु यह सिद्ध है कि 16वीं शताब्दी में कायमखानियों ने जौड़ो से ही झुन्झुनूं के आस–पास का प्रदेश छीना था। आसलपुर के बड़वे की बही के अनुसार लगभग (1040 वि.सं.) 983 ई. के आस पास सिद्धराज ने झुन्झुनूं, नरहड़ एवं लुहारू का विस्तृत प्रदेश डाहलियों से जीता था। नागड़ पठानों ने नरहड़ पर अधिकार करने के लिए जौड़ चौहानों से युद्ध लड़े थे। इससे जौड़ चौहानों के इस क्षेत्र पर अधिकार होने की पुष्टि होती है।[8] जौड़ों ने यहां पर अधिकार कब किया, यह स्पष्ट नहीं । जौड़ चौहानों का गोगा के साथ युद्ध हुआ था। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि राज्याधिकार को लेकर दोनों में युद्ध हुआ था। इसी के बाद जौड़ झुन्झुनूं की तरफ अग्रसित हुए। अन्ततः कायमखानियों एवं पठानों ने इनसे क्रमशः झुन्झुनूं और नरहड़ का प्रदेश छीन लिया।

दूसरी तरफ तोरावाटी के प्रतिहार सामंत के रूप में चौहान सिंहराज ने सालमण तोमर को हरा कर तोरावाटी के विस्तृत क्षेत्र पर अधिकार जमा लिया। चौहानों की अन्य शाखाओं के साथ–साथ राजोरगढ़ के प्रतिहार शासक सांभर के चौहान शासकों के सामंत बन गए । इस समय से इस क्षेत्र के कई भागों पर चौहानों की अनेक शाखाओं द्वारा अधिकार स्थापित करने का पता चलता है।

10 वीं. शताब्दी के उत्तरार्द्ध में गजनी के शासक महमूद गजनवी के नेतृत्व में भारत पर तुर्क आक्रमण शुरू हुए। अबुरिहान ने लिखा है कि महमूद ने 1009 में नराना पर आक्रमण किया। कनिंघम ने

नराना की पहचान अलवर के पास स्थित नारायणपुर से की है तथा लिखा है कि नारायणपुर के राजा ने बड़ी बहादुरी से सामना किया, पर पराजित हुआ। महमूद ने यहां की मूर्तियों को तहस–नहस कर दिया। महमूद के समय गोविन्द तृतीय चौहान शासक था। फरिश्ता ने इसे गजनी के शासक को मारवाड़ में आगे बढ़ने से रोकने वाला कहा है। महमूद ने धन के लिए राजस्थान के कई हिस्सों पर आक्रमण किए। फरिश्ता के अनुसार महमूद बैराठ और नारदिन से 6000 मण सोना और मूल्यवान पत्थर लेकर गया। चिड़ावा – पिलानी के बीच स्थित प्रसिद्ध नरहड़ प्राचीन नारदिन हो सकता है । खतरगच्छ वृहद् गुर्वावली में जैन संस्कृति के स्थलों के रूप में झुन्झुनूं, नूवां, कान्यपुर एवं नरभट्टा का उल्लेख हुआ है। नरभट्टा संभवतः नरहड़ या नरहड़ी का अशुद्ध रूप है। अगरचंद नाहटा नरभट्टा को नरहड़ मानते हैं। राजस्थान के पुराने लोक गीतों में भी इसे नरहड़ी या नराड़ी के नाम से पुकारा गया है । तांबे के मुद्रा निर्माण में प्रयुक्त होने के कारण सम्भवतः यह क्षेत्र महमूद के आक्रमण का मुख्य कारण बना। फरिश्ता ने उपर्युक्त बैराठ और नारदिन पर महमूद के तीन आक्रमणों का उल्लेख किया है। सोमनाथ पर आक्रमण के समय भी महमूद शेखावाटी क्षेत्र से गुजरा। इसी अभियान में दद्रेवा की प्रसिद्ध चौहान शाखा के गोगा देव चौहान ने अपने क्षेत्र को लूट से बचाने के लिए महमूद का सामना किया और वीरगति प्राप्त की। महमूद गजनवी की मृत्यु के बाद तोरावाटी क्षेत्र कन्नौज के गहड़वाल, ग्यालियर के नरवर, दिल्ली के तोमर (तंवर) और अजमेर के चौहानों के प्रभाव से घिरा रहा। अंततः विग्रहराज चतुर्थ (विसलदेव) के समय दिल्ली तक के प्रदेश पर चौहानों का अधिकार हो गया था।

इस प्रकार चौहान शासको ने लम्बे समय तक शेखावाटी में अपनी उपस्थिति बनाए रखी। आगे जा कर दद्रेवा के चौहान शाखा के मोटेराव के पुत्र कर्मचंद जिसे सुल्तान फिरोजशाह ने मुसलमान बना कर कायम खां नाम रखा था के उत्तराधिकारियों कायमखानियों ने शेखावाटी के फतेहपुर एवम झुंझुनूं में नवाबी राज्य कायम किए।

संदर्भ

1. झाबरमल्ल शर्मा, खेतड़ी का इतिहास, पृष्ठ 21
2. नारायण सिंह, शेखावाटी का भूगोल, पृष्ठ 15, सुरजन सिंह शेखावत, शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास, पृष्ठ 2 प्राक्कथन, गोविंद अग्रवाल, क्या चूरू जिला शेखवाटी में है।
3. बिजोलिया शिलालेख श्लोक 12
4. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास पृष्ठ 91 (षिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरा 1995)
5. गोविन्द अग्रवाल, चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास, पृष्ठ 51.
6. कायम खां रासो, पृष्ठ 12., –वाक्यात कौम कायमखानी, पृष्ठ 29–30., –फखरू तवारिख, पृष्ठ 3, शेखावाटी प्रकाश, पृष्ठ 18.
7. ''अजरा ते चाहिल भयो, सिधरा जौर जिहांन। बछरा ते मोहिल भये, अमरा ते चौहान।।'' कायमखां रासो छंद 108.
8. रतनलाल मिश्र, कायमखानी वंष का इतिहास, पृष्ठ 65.